नील सरस्वती स्तोत्र (Neel Saraswati Stotram)

नील सरस्वती स्तोत्र (Neel Saraswati Stotram)
घोर रूपे महारावे सर्वशत्रु भयंकरि।
।
भक्तेभ्यो वरदे देवि त्राहि मां शरणा गतम्।।१।।
मां शरणा गतम्।।१।।
ॐ सुरासुरार्चिते देवि सिद्धगन्धर्वसेविते।
ते।
जाड्यपापहरे देवि त्राहि मां शरणा गतम्।।२।।
मां शरणा गतम्।।२।।
जटाजूटसमायुक्ते लोलजिह्वान्तकारिणि।
।
द्रुतबुद्धिकरे देवि त्राहि मां शरणा गतम्।।३।।
मां शरणा गतम्।।३।।
सौम्यक्रोधधरे रूपे चण्डरूपे नमोऽस्तु ते।
सृष्टिरूपे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणा गतम्।।४।। मां शरणा गतम्।।४।।
जडानां जडतां हन्ति भक्तानां भक्तवत्सला।
भक्तानां भक्तवत्सला।
मूढ़तां हर मे देवि त्राहि मां शरणा गतम्।।५।।
मां शरणा गतम्।।५।।
वं ह्रूं ह्रूं कामये देवि बलिहोमप्रिये नम:।िये नम:।
उग्रतारे नमो नित्यं त्राहि मां शरणागतम्।।६।।
मां शरणागतम्।।६।।
बुद्धिंदेहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे।
मे।
मूढत्वं च हरेद्देवि त्राहि मां शरणा गतम्।।७।।
मां शरणा गतम्।।७।।
इन्द्रा दिविलसद द्वन्द्ववन्दिते करुणा मयि।
।
तारे ताराधिनाथास्ये त्राहि मां शरणा गतम्।।८।।
मां शरणा गतम्।।८।।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां य: पठेन्नर:।यां नवम्यां य: पठेन्नर:।
षण्मासै: सिद्धिमा प्नोति नात्र कार्या विचारणा।।९।।
चारणा।।९।।
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम्।
थी लभते धनम्।
विद्यार्थी लभते विद्यां विद्यां तर्कव्याकरणा दिकम।।१०।।कम।।१०।।
इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु सततं श्रद्धयाऽन्वित:।त:।
तस्य शत्रु: क्षयं याति महा प्रज्ञा प्रजा यते।।११।।
जा यते।।११।।
पीडायां वापि संग्रामे जाड्ये दाने तथा भये।

संग्रामे जाड्ये दाने तथा भये।

य इदं पठति स्तोत्रं शुभं तस्य न संशय:।।१२।।

स्तोत्रं शुभं तस्य न संशय:।।१२।।

इति प्रणम्य स्तुत्वा च योनि मुद्रां प्रदर्श येत।।१३।। येत।।१३।।

।।इति नीलसरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

म्।।